Guided by:
Dr. Mahesh Kr.
SNSRKS Coll.
Saharsa

B.Com III
Cost A/c (VIII Paper)

प्रत्येक आदेश, कार्य, ठेका, प्रक्रिया सेवा अथवा इकाई की लागत निर्धारित करता है तथा यह उत्पादन विक्रय एवं वितरण की लागतें बताता है।

आदर्श लागत लेखांकन में वे विशेषताएँ अथवा गुण होने चाहिए जो कि इसके उद्देश्यों को भली-भांति पूरा कर सकें तथा इसके लाभो को प्राप्त कर सकें। इन विशेषताओं का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है:-

A) विषयगत :-

(i) सरलता →
लागत लेखांकन प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो सरल हो और आसानी से समझ में आ सकें।

(ii) लचीलापन →
लागत लेखांकन प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो व्यवसाय की आवश्यकतानुसार बढ़ायी व घटायी जा सके। यदि व्यवसाय छोटा है तो इसे छोटे रूप में अपनाया जा सके और जैसे-जैसे व्यवसाय प्रगति करके बड़ा होता जाय वैसे-वैसे इस प्रणाली का रूप भी बड़ा किया जा सके।

(iii) मितव्ययिता →
यह प्रणाली कम खर्चीली होनी चाहिए अर्थात जो व्यय किया जाय, वह व्यवसाय के स्वभाव तथा उत्पादन के लागत व्यय को देखते हुए उचित होना चाहिए।

(iv) व्यवसाय की अनुकूलता →
लागत लेखांकन व्यवसाय के लिए होता है न कि व्यवसाय लागत लेखांकन के लिए। अतः लागत लेखांकन विधि ऐसी होनी चाहिए जो भिन्न-भिन्न व्यवसायों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके

Scanned with CamScanner

Guided By:
Dr. Mahesh Kumar
SNSRKS College,
SAHARSA

B.Com III
Cost Acc (नाम) ...

अच्छी - से - अच्छी बनाने का प्रयत्न करता है, साथ में यह भी पता लग जाता है कि उस वस्तु के कुल लागत - व्ययों में प्रत्येक विभाग का कितना योग रहा है।

(iii) लेखों को शुद्ध रखने की क्षमता :-

साधारणतः हर प्रकार की लेखांकन प्रणाली का यह आवश्यक गुण होता है कि उसके लेखे शुद्ध और स्पष्ट हों, परन्तु लागत लेखांकन में इसका और भी अधिक महत्व है। यहाँ लेखे शुद्ध ही नहीं होने चाहिए, परन्तु उनके प्रस्तुत करने का ढंग भी रोचक तथा विश्लेषणात्मक होना चाहिए ताकि प्रत्येक बात स्पष्ट हो सके।

(iv) फॉर्मों एवं प्रारूपों का प्रयोग :-

व्यवस्था में प्रयोग किए जाने वाले फॉर्म एवं प्रारूप उचित प्रकार से तैयार किए जाने चाहिए तथा किसी भी प्रकार की अस्पष्टता को दूर करने के लिए फॉर्मों के पीछे आवश्यक निर्देश मुद्रित होने चाहिए।

(v) लागत निर्धारण एवं लागत नियंत्रण :-

लागत लेखांकन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो प्रबंध को लागत निर्धारण, लागत नियंत्रण, लाभ निर्धारण तथा निर्णयन में सहायक हो सके।

(vi) हिसाबदेयता :-

व्यवस्था ऐसी हो जो प्रत्येक व्यक्ति को उसको सौंपे गये उत्तरदायित्वों के संदर्भ में हिसाबदेय बना सके।

(vii) लागत लेखापाल की स्पष्ट भूमिका :-

लागत लेखापाल की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित रहनी चाहिए, जिससे कार्य में दोहरेपन को रोका जा सके।

Scanned with CamScanner

By
Dr. Mahesh Kr.
SNSRKS Coll.
Saharsa.

(V) तुलनात्मक :-

इस प्रणाली में यह गुण होना चाहिए कि इसके लेखों द्वारा एक वर्ष के लागत फल की तुलना पिछले वर्षों के लागत फल से की जा सके अथवा एक ही वर्ष में समान कार्यों के लागत फल की तुलना एक-दूसरे से की जा सके अन्यथा कार्यकुशलता को मापना कठिन हो जाता है।

(VI) न्यूनतम कार्यालय कार्य :-

लेखांकन व्यवस्था में कागजी कार्य न्यूनतम होना चाहिए अर्थात् प्रयोग किए जाने वाले फॉर्मों, रखे जाने वाले रिकॉर्डों तथा तैयार किए जाने वाले विवरणों में कार्यालय एवं लिपिकीय कार्य न्यूनतम होना चाहिए।

(B) वस्तुनिष्ठ :-

(i) शीघ्र सूचनाएं देने की क्षमता :-

यह प्रणाली ऐसी होनी चाहिए कि न केवल कार्य के होने पर ही वरन् उसकी अधूरी अवस्था में भी लागत-व्यय से संबंधित समस्त सूचनाएं शीघ्रातिशीघ्र मिल सके। इस प्रकार की सूचनाएं निविदा का अनुमानित मूल्य निकालने में तथा विक्रय-मूल्य स्थिर करने में बड़ी सहायक सिद्ध होती हैं।

(ii) कार्य को विभागों में बांटने की क्षमता :-

एक कार्य को कई विभागों में बांट देने से उसका नियंत्रण और निरीक्षण सुलभ हो जाता है। इसके अतिरिक्त, एक वस्तु के निर्माण में प्रत्येक विभाग अपनी विशेषताओं का पूर्ण उपयोग करके उस वस्तु को

2) Q:→ लागत लेखांकन क्या है? एक आदर्श लागत लेखांकन की विशेषताएं को बताएं।

Ans→ लागत लेखांकन ऐसी धाराओं, रीतियों, तकनीकों और प्रक्रियाओं के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिससे किसी उपक्रम के व्यक्तिगत उत्पादों, सेवाओं या विभागों की लागत, लाभदायकता तथा निष्पादन की गणना, विश्लेषण और अनुमान हो सके। लागत लेखांकन सामान्य लेखांकन की एक विशिष्ट शाखा है जिसमें किसी वस्तु या सेवा से संबंधित लागत की विस्तृत एवं व्यवस्थित सूचनाएं रखी जाती हैं जिससे कुल एवं प्रति इकाई की लागत की विस्तृत जानकारी मिल सके तथा लागत विश्लेषण एवं नियंत्रण के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

आई. सी. एम. ए. लन्दन के अनुसार, "लागत ज्ञात करने की तकनीक एवं प्रक्रिया को लागत लेखांकन कहते हैं।" वाल्टर डब्ल्यू. बिग के अनुसार "लागत लेखांकन व्ययों के ऐसे विश्लेषण एवं वर्गीकरण की व्यवस्था है, जिससे उत्पादन की किसी विशिष्ट इकाई की कुल लागत का निर्धारण शुद्धता की उचित मात्रा के साथ किया जा सके और साथ ही सही रूप से यह भी स्पष्ट हो सके ऐसी कुल लागत कैसे आई है।" एल. बी. डिक्सी के अनुसार, "लागत लेखे वित्तीय लेखों के पूरक अथवा सहायक लेखे हैं जो किसी उपक्रम या उसके किसी विशेष विभाग की क्रिया की विस्तृत लागत से संबंधित अतिरिक्त सूचनाएं प्रदान करने के लिए तैयार किए जाते हैं।" हैराल्ड जे. हेल्डन के अनुसार, "लागत लेखांकन उत्पादों या सेवाओं की लागत निश्चित करने और प्रबन्ध के मार्गदर्शन तथा नियंत्रण के लिए उचित रूप से आंकड़े प्रस्तुत करने के लिए व्ययों का वर्गीकरण, अभिलेखन और उपयुक्त आवंटन है। यह